Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal
Impact Factor 5.69
ISSN No. 2456-1665

मेहरुन्निसा परवेज की कहानियों में चित्रित नारी के विविध रूप

डॉ. बियाणी शीतल श्रीनिवास
हिंदी विभागाध्यक्षा एवं सहयोगी प्रोफेसर
राजर्षी शाहू कला एवं विज्ञान महाविद्यालय वाळूज
तह. गंगापूर, जि. छत्रपती संभाजीनगर (महाराष्ट्र)
sheetalbiyani0610@gmail.com
मो.नं.- ८२०८४२५४६५

सृष्टि के आरंभ से ही स्त्री और पुरुष का संबंध रहा है। सृजनकर्ता के रूप में स्त्री और पुरुष ही इस सृष्टि के कम को आगे बढ़ाते हैं। एक सार्थक जीवनके लिए किसी भी व्यक्ति में वे सारे गुण समूह जिनका प्रतिनिधित्व स्त्रियों के सर आता है, ममता, प्रेम, सहिष्णुता, उदारता, क्षमाद्ध उतने ही जरूरी है जितने वे गुण समूह जिनका प्रतिनिधित्व करते हुए पुरुष दिखाये जाते हैं। (वीरता, शौर्य, नियत्रंण, न्याय, दमन, तटस्थता) स्त्री को सुकोमलता और पुरुष की बलता, स्त्री को पुरूष के अधिकार में जाने में सहायक रही। प्राकृतिक चक्र के रूप में यदि देखा जाए तो स्त्री और पुरुष एक-दूसरे के पूरक हैं।जगदीश्वर चतुर्वेदी जी कहते हैं, "स्त्री समाज की मुख्य धारा का आधा आकाश है, आधा यथार्थ है, तो उसका हर चीज, हर विचार, प्रत्येक सृजन रूप एवं संस्थागत रूपों में बराबर का हक भी बनता है। स्त्री की उपेक्षा वस्तुतः आधे यथार्थ की स्वीकृति है, यह खंडित यथार्थ, यह ऐसा स्वार्थ है जो अवास्तविक है।"

प्रकृति ने नारी को कुछ विशेष अलंकारों से विभूषित किया है, पुरुषों की तुलना में नारियों में कई गुण एवं विशेषतायें अधिक होती हैं। पुरुष को भले ही बल और साहस के क्षेत्र में हमेशा आगे माना गया है, परंतु संवेदनाओं और भावनाओं की तीव्रता सदैव नारी में ही अधिक विद्यमान रही हैं और रहेगी। प्रकृति ने ये गुण उसे नैसर्गिक रूप से प्रदान किया है।मेहरुन्निसा परवेज ने अपने कथा साहित्य में स्त्री के पुरुष से हर संबंधों की व्याख्या की है।है।मेहरुन्निसा परवेज ने अपने कथा साहित्य में स्त्री के पुरुष से हर संबंधों की व्याख्या की है।मेहरून्निसा परवेज की कहानी 'अंतिम चढ़ाई' में नायिका माला अपने पहले पति जितेन से हुए बेटे रूपेश से मिलने जाती है। वह अपनी माँ से अजनबियों की तरह मिलता है, क्योंकि उसके पिता ने उसके मन में उसकी माँ के प्रति गलतफहमी भर दी है - "एक्सक्यूज मी......आप ही माला भारद्वाज हैं ?"१'अपने होने का अहसास' कहानी एक ऐसी नारी की कहानी है, जिसे अपने पति से अपमान और दुत्कार के अतिरिक्त कुछ नहीं मिला, किंतु नारी के माँ रूप को परिवार में समानता का अधिकार उसके बेटे के प्रेम और आदर के भाव से मिलता है। राजन अपनी माँ को अपने नए जीवन की शुरूआत करने से पहले कहता है- “माँ. आर्शीवाद दो। कहता राजन उसके पैरों की तरफ झुक गया। माँ, मैं तुम्हें लेने आया हूँ। मेरे घर को तुम अपने हाथों से संवारो गी। मैं तुम्हें यहां अब रहने नहीं दूंगा।“२

एक स्त्री का स्वयं स्त्री होना उसके लिए दुखद तो है ही यदि वह बेटी की माँ हो तो उसका जीवन दुर्भाग्यपूर्ण हो जाता है।अपनी जमीन' कहानी की नायिका गोदावरी चार बेटियों की माँ है, बेटे की आशा में उसकी चार बेटियों हो जाती हैं। "चौथी बेटी की सौर के समय जब दाई ने सास से कहा था, कन्या जन्मी है, तब उसने अधखुले फाटक से सास का मुँह देखा था, उसके बाद फिर सास की शक्ल नहीं देखी थी। उसे घी, हरीरा कुछ नहीं दिया गया था। वह खाट पर पड़ी पड़ी किस्मत को कोसती, रोती रहती थी। लड़की के जन्म को बहुत बुरा माना जाता है।" ३ प्रस्तुत कथ्य से स्पष्ट है कि किस प्रकार बेटी की माॅ होना हेय समझा जाता है और पुत्र पैदा होने पर मान-सम्मान प्राप्त होता है।

नारी का दूसरा सबसे महत्वपूर्ण रूप पत्नी का है। एक स्त्री दूसरे पारिवारिक वातावरण से आकर अपने पति के परिवार के वातावरण में स्वयं को ढालती है और सामंजस्य बिठाती है। परिवार का प्रत्येक सदस्य उस एक स्त्री पर निर्भर करता है।यदि कोई पत्नी अपने अधिकारों के लिए लड़ती है, तो हजार बार विचार करती है, क्योंकि एक ओर समाज में उसकी छवि है तो दूसरी ओर उसका स्वयं का अस्तित्व।

उसकी चेतना बाह्य वातावरण के लिए उसे प्रेरित करती है तो उसके मन का अंतर्विरोध उसके पैरों में बेडियों डालता है। समाज में रहकर ही समाज के नियमों का विरोध करना उसके लिए सहज नहीं हो पाता।यह द्वंद्व हमे मेहरुन्निसा की कहानी 'खाली आँखों की पीड़ा' की नायिका उमा में देखने को मिलता है। वह अपने पिता और पति के मध्य सामंजस्य नहीं बैठा पाती, उसका पति उसके पिता के व्यवहार से चिढ़ा हुआ है। वह दोनों को नहीं छोड़ सकती।

एक औरत के जीवन की सारी आशाएँ, इच्छाएं तब खत्म हो जाती है, जब उसका पति उसके ही सामने दूसरी पत्नी ले आता है।'टहनियों पर धूप' की नायिका को फालिस हो जाने पर उसका पति एक विधवा स्त्री को अपने घर ले आता है- "घर के काम के लिए एक बेवा जवानऔरत को रख लिया गया था। पर क्या वास्तव में वह नौकरानी थी? यह उसकी सौत थी। दिल पर कोई जोर का घूँसा मारता था। वह आँखों पर कोहनी रखे चुप पडी रहती। नौकरानी से वह कब उसकी सौत बन गई, यह किसी ने नहीं जाना, पर यह जान गई थी, पहले ही दिन ....।"४ मेहरुन्निसा परवेज ने इस कहानी में यह स्पष्ट किया है कि स्त्री केवल भोग्या है, शारीरिक रूप से यदि वह पुरुष को संतुष्ट नहीं कर पाती तो उसकी घर में उपस्थिति नगण्य है।

जीवन-मंथन' की नंदिता भी अपने अस्तित्व और अपनी पहचान के लिए संघर्ष करती दिखाई देती है। उसका पति अमित यूं तो बड़ी-बड़ी बातें करता है और आधुनिक होने की तरफदारी करता है, किंतु अपनी पत्नी नंदिता के लिए उसके विचार दकियानूसी ही रहते हैं।

'एक और सैलाब' कहानी में नायिका नीलू अपने पति की बीमारी और आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण वह अपने जीवन से पीड़ित और कुण्ठित नारी है।वह अपने जीवन की कठिनाइयों और अस्पताल के खर्चों से तंग आकर कठिन निर्णय लेती है और अपने पति को अधिक नींद की गोलियां खिलाकर उसका वध करती है।"आर्थिक साधन न होने के कारण वह

अपने गहने बेच कर पति का इलाज और घर का खर्चा चलाती है।" ५ और फिर से अपने जीवन की अन्य कठिनाइयों से जूझने के लिए भीड़ के सैलाब में खो जाती है।

समकालीन परिप्रेक्ष्य में स्त्री-पुरुष संबंध के विविध स्वरूपों के अंतर्गत परवेज जी अपनी कहानियों में बेटी के हक की बात उठाती है। 'लौट जाओ बाबूजी कहानी नायिका शालू और गिरीश के प्रेम के माध्यम से नई परिपाटी का संकेत ही नहीं देती बल्कि उदाहरण भी रखती है।"६

अर्थाभाव के कारण बेटी का विवाह न कर पा रहे माता-पिता की असहायता को जाने कब' कहानी में व्यक्त किया गया है। शन्नों की छटपटाहट और निरर्थकता का एहसास इस कहानी में व्यक्त हुआ है।'बड़े लोग' कहानी में सुखी आपा कहती हैं- "देख जो अम्मा नौ महिने पेट के घर में रखती है, वह बड़ी होने पर अपने ईंटों के घर में नहीं रख सकती। अम्मा हर समय मुझ पर गुस्सा उतारती रहती है।"७ परवेज जी ने एक ऐसे भारतीय समाज का खुला चित्र यहाँ प्रस्तुत किया है जहाँ जन्म देने वाले माता-पिता भी सामाजिक नियमों के आगे विवश से नजर आते हैं और बेटियों का दोष न होते हुए भी उस पर कोधित होते हैं।

'पाँचवी कब्र' कहानी में रहमान अपनी बेटी की शादी ऐसे आदमी से करने को राजी हो जाता है, जो शराब और जुआ का आदी है, औरतबाज है। रहमान अपनी पत्नी नाजों से कहता," औरत रखने का शौक है उसे तो यह भी कोई बात नहीं। अरे, अपने इस्लाम में तो चार शादियों की इजाजत है।... आँखें फैलाकर एक ऊँगली ठोड़ी पर टिकाते हुए नाजों बोली. हाँ बात तो सोलह आने ठीक है। फिर वह राज बताने के अंदाज में बोली, अपनी लौंडिया कौन शबनम से धुली-पुती बैठी है।... रहमान ने नाजो की पीठ ठोंकी. हाँ यह तुमने ठीक कही। अगले महीने में ही शादी कर देंगे। बाद का पचड़ा सह लेंगे। गले में पड़ा ढोल कौन नहीं बजाता जी?"८ मेहरुन्निसा परवेज ने उपरोक्त कहानी में समाज की खोखली व्यवस्था का नग्न चित्र प्रस्तुत किया है, जहाँ माता-पिता ही अपनी बेटी को अंधकार में ढकेलने में नहीं हिचकिचाते और इसका सीधा सा कारण समाज में लड़कियों की शादी में होने वाला खर्च, जो कोई भी साधारण माता-पिता वहन करने में असक्षम होते हैं और दूसरा अविवाहित लड़की का विवाह करवाने का सामाजिक दबाव, ये दोनों परिस्थितियों एक स्त्री को तोड़ कर रख देती हैं।स्त्री चाहे बहन हो या माँ या पत्नी, उसकी इच्छाओं पर पुरुष ध्यान नहीं देता। इस सत्य को परवेज जी ने 'अकेला गुलमोहर' कहानी में सुधा के माध्यम से उद्घाटित किया है।

हमारे भारतीय समाज में भाई-बहन का रिश्ता पवित्र माना जाता है।'अकेला गुलमोहर' कहानी में सुधा के बड़े भईया चाहते हैं कि सब अपना-अपना खर्च उठाएं, सुधा नौकरी पेशा महिला है, इसलिए उसके भईया चाहते हैं कि उसकी शादी न हो। इंसान के लालच और व्याभिचार इतने बढ़ गए हैं कि एक ओर एक भाई अपनी बहन की शादी नहीं होने देता तो दूसरी ओर एक भाई अपनी ही बहन का सौदा कर आता है। ओढना कहानी की नायिका रानी का भाई उसका सौदा चेतन से कर देता है और जसकी जगह पर अपनी छोटी बहन सारा को धंधे पर बैठाने की बात करता है,"वह बोल रहा था. रानी को दूसरे के लिए नहीं बैठाना है, उसी

के लिए रखना है, वह पूरा खर्चा देता रहेगा। अनारों लाखा के लिए बैठ गई है. अब इसे भी बैठाएगा तो काम कैसे चलेगा? बाबा बोला। सारा को भी बैठा देंगे। भैया ने सलाह दी अब तो हर घर में दो-दी. तीन-तीन लड़िकयां बैठने लगी हैं।" ९ इस प्रकार हम देखते हैं कि किस प्रकार भाई अपनी कमजोरियों को छुपाते हुए अपनी बहनों का सौदा करता है। 'हत्या एक दोपहर की कहानी की नुपुर एक विधवा स्त्री है वह अपने बेटे के साथ अपने मायके में रहती है। यह बात उसके भईया को खटकती है ।

नारी समाज की सृष्टिकर्ता है अर्थात जन्मदात्री है। घर की लक्ष्मी के रूप में वह सदैव ठगी गई है। घर के काम की जिम्मेदारियां, बच्चों का लालन-पालन, पति के माता-पिता के प्रति कर्तव्यों का निर्वहन बहुत अच्छे से करती है। प्रेम विवाह करने वाली नारी पात्रों की स्थिति, सामाजिक विवाह करने वाली नारी पात्रों से भी भयावह स्थिति में है।'अपने-अपने लोग' कहानी की नायिका सुमन ने प्रेम-विवाह किया है।बहु के रूप में यदि पति के घर में स्थान बनाना हो तो उसे अधिक से अधिक धन लाना पड़ता है तथा घर और बाहर उसे दोहरी जिम्मेदारी भी निशानी पडती है।

स्त्री की संवेदनशीलता के कारण हर कोई उसका फायदा उठाना चाहता है. प्रेम में पड़ी स्त्री को उसका प्रेमी मीठी-मीठी बातें करके, उसके साथ शादी के वादे करके अपने रिश्तें में बाँधे रखता है, वह विश्वास की डोर से बंधी रहती है, आँख तब खुलती है, जब उसे यह ज्ञात होता है कि वह असल में प्रेम नहीं बल्कि केवल छलावा था। लेखिका ने अपनी बहुत सी कहानियों में, इस प्रकार के प्रेम का चित्रण किया है। क्यों नहीं कहानी की नायिका गुडिया दिनेश से प्रेम करने लगती है, उनकी बात शादी तक भी पहुँच जाती है, पर जब दिनेश अपने गाँव जाता है तो फिर वापस नहीं आता है।'रावण' कहानी में प्रशांत शुभी से वादा करके वापस नहीं आता -,"।... उसने एक-एक दिन पहाड़ की तरह काटे। बस इंतजार ! उसे उम्मीद थी प्रशांत उसे सभी झंझटों से मुक्त कर ले जाएगा, पर वह दिन कभी नहीं लौटा।"९

लेखिका की कहानियों में हमें ऐसी नारी पात्र भी देखने को मिलती है, जो परिवार की परम्पराओं के नाम पर अपने प्रेम का गला घोंट देती हैं। 'सोने केबेसर' कहानी में कुमकुम का विवाह देबू की जगह उसके छोटे भाई से कर दिया जाता है।परिवार की इज्जत के लिए ऐसा कदम उठाना पड़ता ड़ता है जो कुमकुम के लिए जीवन भर का श्राप बन जाती है। ' सिर्फ एक आदमी' कहानी की नायिका सुम्मी अपनी पसंद से विवाह करना चाहती है, किंतु वह अपने पिता के कारण ऐसा नहीं कर पा रही है। वह अतुल से कहती है- "अतुल, क्या तुम बप्पा की मौत तक इंतजार नहीं कर सकते? जिस दिन बप्पा मरेंगे, मैं तुम्हारे पास चली आऊँगी, बस।"१० सुम्मी ने अपने प्रेम को तिलांजलि देकर अपने पिता और परिवार के अभिमान को बचाती है।

स्पष्टतः परवेज नारी की अंतरतम भावनाओं को छूने का सार्थक प्रयत्न करती दिखाई देती हैं। नारी किस प्रकार पुरुष द्वारा छली जाती है, किस प्रकार एक पुरुष एक स्त्री का शोषण करता है, अपनी कमियों और कमजोरियों का बदला भी स्त्री से लेता है, इसका बड़ा ही

मार्मिक, सटीक और हृदयद्रावक चित्रण किया है। मेहरुन्निसा परवेज स्वयं एक स्त्री है। अतः उन्होंने अपनी कहानियों में स्त्री की उस मौन पीड़ा का बड़ा ही सटीक चित्रण किया है। स्त्री की संवेदना, उसके विचारों के द्वंद्व को लेखिका ने अपनी लेखनी के माध्यम से उपन्यास एवं कहानियों में उकेरने का प्रयास किया है। लेखिका ने विवाहित नारी की विवशताओं का गहन चित्रण किया है। विवाहित नारी की आदर्शात्मक स्थिति तो सम्मानीय है, किंतु व्यवहारिक रूप से नारी की अवस्था दयनीय है। नारी की इन विडम्बनाओं का विश्लेषण करने में लेखिका सफल रही है। मेहरुन्निसा परवेज ने नारी की समस्याओं, उसके कशमकश, उसके मानसिक संघर्ष को बड़ी ही स्वाभाविकता से वे हमारे समक्ष लेकर आती हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. परवेज, मेहरुन्निसा. अंतिम चढ़ाई, दिल्ली राजकमल प्रकाशन,1982, पृ. 16.
2. परवेज, मेहरून्निसा, लाल गुलाब, दिल्ली प्रभात प्रकाशन,2011, पृ 74
3. परवेज, मेहरून्निसा, ढहता कुतुबमीनार, दिल्ली: सत्साहित्य प्रकाशन,1992, पृ. 51
4. परवेज, मेहरुन्निसा, टहनियों पर धूप दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 1977, पृ 140
5. जबीन जाहिदा जौहरा अफजल, मेहरून्निसा परवेज और उनका कहानी संसार, नई दिल्ली: मोहित पब्लिकेशंस,2003, पृ. 76
6. परवेज, मेहरून्निसा. अम्मा, दिल्ली: ज्ञानगंगा प्रकाशन, 1997. पृ 122
7. परवेज, मेहरून्निसा. लाल गुलाब, नई दिल्ली. प्रभात प्रकाशन,2011, पृ. 52
8. परवेज, मेहरून्निसा, रिश्ते. दिल्ली आर्य बुक डिपो , 1992, पृ. 132
9. परवेज, मेहरून्निसा. फाल्गुनी, दिल्ली: पराग प्रकाशन,1978, पृ. 55
10. परवेज, मेहरून्निसा. आदम और हव्या. दिल्ली नेशनल पब्लिशिंग हाउस,1972, पृ. 42